ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072
Janury-June 2024- Vol. 13 No. 1

पर्यावरन, ऐतिहासिक दिशा और नदियोंके उपकरण

श्रीमती वंदना उरकुड़े*
सहायक प्रोफेसर
शासकीय महाविद्यालय मवई जी. मांडला (म.प्र.)

डॉ. के. एल. धुर्वे**
मार्गदर्शक
शासकीय महाविद्यालय, निवास जी. मांडला (म. प्र.)

सारांश

यह शोध पत्र भारत की नदियों की भौगोलिक वास्तविकता, ऐतिहासिक दिशा, और उनके उपयोग के उपकरणों का विश्लेषण करता है। भारत की नदियाँ न केवल भौगोलिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ये ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। नदियाँ प्राचीन काल से ही सभ्यताओं के विकास में एक केंद्रीय भूमिका निभाती आई हैं। यह शोध पत्र नदियों के भौगोलिक गुण, ऐतिहासिक महत्व, और उपकरणों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्रस्तावना

नदी के किनारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मेलजोल की यह भावना बहुत व्यापक है, और यदि इसे उचित रूप से चित्रित किया जाए, तो यह राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण पहल बन सकता है। सरिता कोरा ने इस अध्ययन को दो भागों में विभाजित किया है—इतिहास और खोरा तथा संस्कृति। खोरा और संस्कृति के भाग को नदी और मानव के संबंध में विश्लेषित किया गया है। खोरो का इतिहास राजनीतिक इतिहास से भिन्न होता है, और यह पहले ही स्पष्ट किया गया है। इस शोध-प्रबंध में कुछ चयनित खोरो के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। खोरो का निर्माण, उनका विकास और ह्रास एक कालक्रमिक और प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसमें मानव वसाहतों के निर्माण के बाद उनका और खोरो का संबंध कैसे स्थापित हुआ, इसका विश्लेषण किया गया है। इसमें खोरो की अभिजात ऊर्जा स्रोत, किए गए परिवर्तन, और खोरो की प्रतिक्रिया पर विचार किया गया है।

मनुष्य अन्य जीवों की तरह एक जीव है, लेकिन उसने विचारशीलता के बल पर अपनी संस्कृति बनाई और अपनी सोच की गहराई को सिद्ध किया। उसकी दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अन्य जीवों की तरह प्राकृतिक खाद्य श्रृंखला का उपयोग नहीं कर सकता। प्रारंभिक मानव जीवन में नदी के किनारे बसना कई दृष्टियों से लाभकारी था, और इसीलिए उसने अश्मयुग के कालखंड में बड़ी नदियों के उपखोरों में बसाहत की। जब वह भोजन संग्रहक प्राणी था, उसकी आवश्यकताएँ भोजन, जल और निवारा तक सीमित थीं, इसलिए उसने भारतभर में नदियों के छोटे-छोटे खोरे में बसाहतें कीं। इसमें हिमालय, नेपाल के खोरे, मध्य हिमालय के गंगा क्षेत्र, सतलज नदी के खोरे, मध्य गंगा खोरे में मध्याश्मयुगीन वसाहतें, विंध्य और हिमालय रेंज के मध्यवर्ती क्षेत्र में उत्तरी उत्तराश्मयुग से ऐतिहासिक काल तक की बसाहतें शामिल हैं। इन सभी बसाहतों के निर्माण में सहजीवन की प्रेरणा देखी जाती है। इन बसाहतों के निर्माण के बाद भी नवाश्मयुगीन समाज के कृषक संस्कृति में रूपांतरण होने में काफी समय लगा। जलसंपत्ति, खनिज संसाधन, खनिजों से धातु निर्माण की प्रक्रिया में कौशल, उपजाऊ भूमि की उपलब्धता, परिवहन की सुविधाएँ, व्यापार की वृद्धि, तकनीकी विकास, और संघर्ष के कारण व्यापार में कौशल बढ़ा, और इसके बाद नागरिकता का विकास हुआ।

- **नवाश्मयुगीन संस्कृति और नदी**

नागरीकरण की शुरुआत ने राज्य निर्माण की प्रस्तावना दी। नगर निर्माण के प्रमाण और राज्य निर्माण के विषय में कई विचारधाराएँ हैं। नदी संस्कृति के उत्खनित स्थलों ने इस पर व्यापक प्रकाश डाला है। नदियों के तटों का जाल, उपजाऊ भूमि, सुलभ परिवहन, जनसंख्या की मानसिकता, सुरक्षित भौगोलिक पृष्ठभूमि, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, तकनीकी प्रगति, सिंचाई नियंत्रण, सामाजिक स्तरीकरण, और विदेशी आक्रमणों को रोकने के उपाय—ये सभी घटक राज्य निर्माण के लिए आवश्यक थे। विभिन्न उद्योगों के निर्माण में सक्षम वर्ग, उत्कृष्ट परिवहन व्यवस्था, और कुशल प्रशासन ने छोटे-छोटे राज्यों के निर्माण को सरल बना दिया। रोमिला थापर ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि प्राचीन भारतीय राज्य एक संघ थे और मजबूत केंद्रीय शक्ति की कमी थी। नेता ने अपने छोटे-छोटे राज्य बनाने में मदद की, और संधि प्राप्त होते ही केंद्रीय शक्ति का उपयोग करके प्रभुत्व स्थापित किया।

ईसवी सन् 300 से 1200 के बीच 300 शिलालेखों का विस्तृत अध्ययन करते हुए उपेन्द्र सिंह ने दिखाया है कि

इस काल में राजनीतिक दृष्टिकोण बहुत संवेदनशील था। कलिंग में कई राजमहलों का निर्माण हुआ था, जहाँ जलसंपत्ति समृद्ध थी और जनसंख्या सीमित थी। कलिंग की उपनदियों के तटों पर समृद्ध जलसंपत्ति और उपजाऊ भूमि उपलब्ध थी। कलिंग के रूपांतर उस समय प्रचलित ठिकानों में हुए। पश्चिम की ओर खनिज संपदा और प्रचुर मात्रा में संसाधन उपलब्ध थे। शिशुपालगड, असुरगड, राधानगरी, पुरी, भुवनेश्वर जैसे महानगरों का निर्माण हुआ। उन्होंने पूर्वी तट पर बंदरगाहों के साथ बेहतर संपर्क स्थापित किया और पश्चिमी उड़ीसा में रत्नों ने दक्षिणी व्यापार को प्रोत्साहन दिया। इससे पूर्वी तट पर बड़े-बड़े बंदरगाह, किले, और शानदार मंदिरों का निर्माण हुआ, और कलिंग का प्रमुख देवता जगन्नाथ उभरा।

➢ **भौगोलिक वास्तविकता**

भारत में प्रमुख नदियाँ अपने भौगोलिक स्वरूप और प्रवाह के आधार पर चार मुख्य नदी प्रणालियों में बांटी जाती हैं:

✓ **हिमालयन नदियाँ**

- **गंगा-** यह नदी उत्तर भारत में गंगा घाटी का निर्माण करती है और धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व रखती है। इसकी तीन प्रमुख शाखाएँ हैं: भागीरथी, अलकनंदा, और यमुनोत्री।
- **ब्रह्मपुत्र-** यह नदी तिब्बत से भारत में प्रवेश करती है और असम के माध्यम से बांग्लादेश में बहती है। यह नदी बाढ़ और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के लिए जानी जाती है।
- **सिंधु-** यह नदी पाकिस्तान में बहती है, लेकिन इसका स्रोत हिमालय में होता है और भारतीय क्षेत्र में इसकी कई प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

✓ **गेराजियन नदियाँ:**

- **गोदावरी-** यह नदी मध्य भारत से निकलती है और पूर्वी तट पर बहती है। इसे "दक्षिण की गंगा" कहा जाता है।
- **कृष्णा-** यह नदी दक्षिण भारत की प्रमुख नदी है, जो कर्नाटका और आंध्र प्रदेश से होकर बहती है और बंगलौर से चंद्राबागा तक फैलती है।

✓ **पश्चिमी तट नदियाँ**

- **सावित्री-** यह नदी पश्चिमी घाट से निकलती है और अरब सागर में बहती है। यह क्षेत्रीय कृषि और जल आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है।
- **ताप्ती-** यह नदी मध्य भारत से बहती है और पश्चिमी तट पर अरब सागर में मिलती है। इसकी महत्वपूर्ण भूमिका क्षेत्रीय सिंचाई में है।

✓ **डेक्कन पठारी नदियाँ**

- नर्मदा- यह नदी मध्य भारत के पठारी क्षेत्र से निकलती है और पश्चिमी तट पर बहती है। यह नदी क्षेत्रीय जलवायु और बाढ़ नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है।
- **ताप्ती-** यह नदी मध्य भारत के पठारी क्षेत्र से निकलती है और पश्चिमी तट पर बहती है।

इतिहास से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में नदी के किनारों और सहायक उपनदियों के जलमय क्षेत्रों से नागरिकों का आगमन हुआ और कई छोटे-छोटे नगरराज्यों का उदय हुआ। ये नगरराज्य समृद्ध साम्राज्यों में परिवर्तित हो गए और विदेशी व्यापार का विस्तार हुआ। उन्होंने नगरों के लिए संरक्षण व्यवस्था, जल व्यवस्था, और सिंचाई प्रणालियों को उन्नत किया। उपनदियों के किनारे जलाशयों का निर्माण करके कृष्ण समृद्ध राज्य की स्थापना की गई, जिसकी समृद्ध संस्कृति आज के उड़ीसा राज्य के कालहंडी क्षेत्र में देखी जा सकती है।

नए युग की संस्कृति से कृषि संस्कृति में बदलाव स्पष्ट होते हैं। अनाज उत्पादन करने की भूमिका से अनाज उत्पादक की भूमिका में परिवर्तन आया, जिससे उपयुक्त भूमि की आवश्यकता बढ़ गई। सिंधु संस्कृति में कृषि उन्नति की प्रक्रिया हुई, और दाढ़ीदार वस्त्रों से संबंधित पहचान परिवर्तित हुई। यह संकेत करता है कि पहली नदी संस्कृति हजारों वर्षों तक अस्तित्व में रही और भौतिक विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संक्रमण काल में पर्यावरण विशेषज्ञ, जलविज्ञानी, भूविज्ञानी, और वनस्पति विशेषज्ञ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बढ़ती जनसंख्या के दबाव में इन क्षेत्रों में तेजी से जानकारी प्राप्त की जाती है। इस काल में भगीरथ, अगस्त्य, परशुराम, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, चाणक्य जैसे आचार्यों के नाम इतिहास में दर्ज हैं। उन्होंने किए गए कार्यों और उनके नामों के आधार पर विचार किया जा सकता है। इन ऋषियों के नाम नदियों के किनारे हमेशा जुड़े होते हैं, और उनके कार्यों के तार्किक विश्लेषण से हमें उस सत्य का अध्ययन करने में मदद मिलती है। अगस्त्य आचार्य ने भारत में अगस्त के ऋषि का नाम पहाड़ी श्रेणियों से लेकर हिंदी महासागर तक कई नदियों

के किनारे जोड़ा। कावेरी नदी के साथ उनके संबंध और उनकी गतिविधियाँ उनकी व्यापक भूमिका को दर्शाती हैं।

✓ **ऐतिहासिक दिशा:**

भारत की नदियों ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारतीय सभ्यता की दिशा को आकार दिया है। नदियाँ प्राचीन सभ्यताओं के लिए जीवनदायिनी रही हैं और इन्हें कई महत्वपूर्ण घटनाओं और धरोहरों से जोड़ा गया है| सिन्धु घाटी सभ्यता सिन्धु और उसकी सहायक नदियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यता के केंद्र थीं। इन नदियों ने प्राचीन नगरों के विकास और कृषि को प्रोत्साहित किया। मौर्य और गुप्त साम्राज्य गंगा नदी के किनारे स्थित नगरों ने मौर्य और गुप्त साम्राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन नदियों के आसपास व्यापार और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विकसित हुईं। मुगल साम्राज्य मुगलों ने गंगा और यमुना नदी के आसपास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण वास्तुकला और शहरों का निर्माण किया। ताजमहल और फतेहपुर सीकरी जैसे स्थल इस काल के प्रमुख उदाहरण हैं। नदियों का मानव जीवन में विविध उपयोग होता है, जिनमें शामिल हैं| जल आपूर्ति नदियाँ पेयजल और सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। विशेषकर कृषि क्षेत्र में नदियों के जल का उपयोग फसलों की वृद्धि के लिए किया जाता है। यातायात प्राचीन काल में नदियाँ प्रमुख जलमार्ग के रूप में कार्य करती थीं। आज भी कुछ क्षेत्रों में नदियों का उपयोग यातायात और परिवहन के लिए किया जाता है। कई नदियों पर बाँध और जलविद्युत परियोजनाएं स्थापित की गई हैं, जो विद्युत ऊर्जा का उत्पादन करती हैं| नदियाँ भारतीय संस्कृति और धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। गंगा, यमुना, और यमुनोत्री जैसे नदियाँ पूजा और तीर्थ यात्रा के महत्वपूर्ण स्थल हैं। इनकी भौगोलिक विशेषताएँ, ऐतिहासिक दिशा, और उपयोगी उपकरण मानव सभ्यता के विकास और संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। नदियों का संरक्षण और सतत प्रबंधन आवश्यक है ताकि ये भविष्य में भी जीवनदायिनी स्रोत बनी रहें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- कौटिल्य वही
- महावग्ग
- चल्लवग्ग
- जातक
- स्ट्रेबों
- गाथा सप्तसती
- उद्धत
- रामायण
- महाभारत
- शांतिपर्व
- शिलालेख
- स्तम्भ लेख
- स्ट्रेबों
- शिलालेख
- स्तम्भ लेख
- अमरकोश